आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान

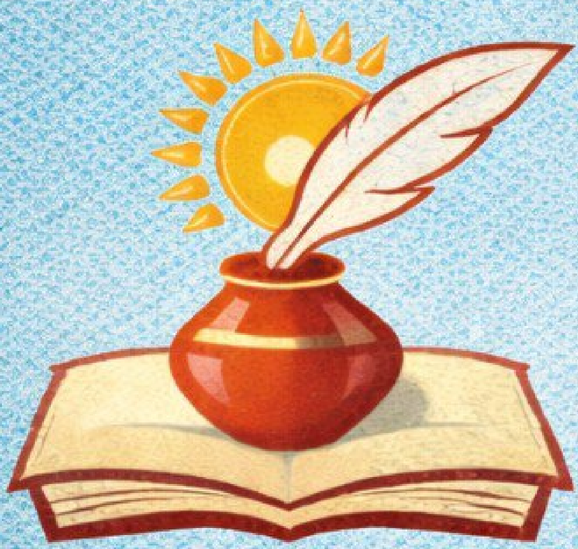

देवचंद्र भारती 'प्रखर'

अनुक्रम

भूमिका 9

(खण्ड - क)

1. डॉ. आंबेडकर का जीवन संघर्ष 13
2. डॉ. आंबेडकर का दर्शन और मिशन 29
3. आंबेडकरवाद और आंबेडकरवादी चेतना 70
4. आंबेडकरवादी कवियों का परिचय 86
5. आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान 111

(खण्ड - ख)

काव्य - संग्रह समीक्षा

बहुजन दोहावली : *आर.जी. कुरील* 159

आग और आंदोलन : *मोहनदास नैमिशराय* 165

बस्स! बहुत हो चुका : *ओमप्रकाश वाल्मीकि* 172

न्याय तलाशते लोग : *जी.सी. लाल 'व्यथित'* 179

कौशल के हास्य-व्यंग्य : *नंदलाल कौशल* 189

लाल बत्ती : *डॉ. कुसुम वियोगी* 195

प्रतिनिधि कविताएँ : *डॉ. एन. सिंह* 201

तिनका - तिनका आग : *डॉ. जयप्रकाश कर्दम* 208

माटी के वारिस : *सुदेश कुमार 'तनवर'* 215

कलम से कत्ल : *कांता बौद्ध* 223

बीमार मानस का गेह : *डॉ. मुसाफिर बैठा* 229

युद्ध अभी जारी है : *अरविंद भारती* 235

(खण्ड - ग)

'दलित जागरण' पुस्तक की समीक्षा

'प्रखर' की कविताएँ : संवेदना एवं शिल्प : *डॉ. विपिन कुमार* 247

'दलित जागरण' मील का पत्थर है। : *डॉ. सूरजमल सितम* 251

उपसंहार 254

संदर्भ ग्रंथ सूची 259

भूमिका

यह आलोचना-ग्रंथ एक चुनौती का परिणाम है, जिसकी पृष्ठभूमि में एक लघुकथा है। दिनांक : 12 सितंबर, 2020 को मेरे एक फेसबुक पोस्ट पर टिप्पणी करते हुए वरिष्ठ हिंदी आलोचक माननीय कँवल भारती जी ने मेरे समक्ष एक चुनौती प्रस्तुत की थी कि मैं एक आलोचना-ग्रंथ लिखकर प्रस्तुत करूँ। चूँकि मैं दलित साहित्य की अवधारणा से असहमत हूँ, इसलिए मैंने आंबेडकरवादी साहित्य पर विमर्श करना आरंभ किया था, जिसके परिणाम स्वरूप इस चुनौती की परिस्थिति से भी सामना हुआ। फिर भी मैंने इस चुनौती को चुनौती नहीं समझा, बल्कि माननीय भारती जी का एक आदेश समझकर उसका अनुपालन किया, जो मेरे लिए हितकर ही साबित हुआ। इसी बहाने बहुत ही कम समय में एक आलोचना-ग्रंथ का भी नाम मेरी प्रकाशित कृतियों की सूची में शामिल हो गया। इस ग्रंथ को लिखते समय सामग्री जुटाने में बहुत असुविधा नहीं हुई, क्योंकि इसके पहले समकालीन हिंदी दलित कविता भाग '1' और भाग '2' नामक पुस्तक का संपादन करने के दौरान दर्जनों वरिष्ठ साहित्यकारों से मेरा घनिष्ठ लगाव हो चुका था। उन्हीं लोगों के सहयोग से मुझे बहुत ही कम समय में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो गई। उन सहयोगी साहित्यकारों में डॉ. दामोदर मोरे जी, डॉ. विमल कीर्ति जी, डॉ. सूरजमल सितम जी, डॉ. कुसुम वियोगी जी, कर्मशील भारती जी और पुष्पा विवेक जी आदि के नाम शामिल हैं।

इस पुस्तक को लिखते समय मेरे सामने सबसे पहली समस्या यह थी कि मैं आरंभ कहाँ से करूँ? मैंने अनुभव किया कि आंबेडकरवादी कविता के 'प्रतिमान' प्रस्तुत करने से पहले मुझे आंबेडकरवाद का अर्थ और 'परिभाषा' स्पष्ट करनी चाहिए। फिर यह अनुभव हुआ कि उससे भी पहले डॉ. आंबेडकर के जीवन-दर्शन और 'मिशन' का उल्लेख करना चाहिए। लेकिन तभी यह

अनुभव हुआ कि सबसे पहले 'डॉ. आंबेडकर के जीवन-संघर्ष' का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना चाहिए, क्योंकि आंबेडकर के जीवन-संघर्ष का ही परिणाम 'आंबेडकर का जीवन-दर्शन और मिशन' है तथा आंबेडकर के जीवन-दर्शन और मिशन से ही आंबेडकरवाद की उत्पत्ति हुई है। इसलिए इस पुस्तक में इन अध्यायों को जोड़ना अनिवार्य था। इससे प्रथम लाभ यह होगा कि सामान्य पाठकों को समझने में बहुत आसानी होगी। दूसरा लाभ यह होगा कि उन्हें आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान के साथ-साथ डॉ. आंबेडकर जी के जीवन-संघर्ष तथा उनके दर्शन व मिशन की भी संक्षिप्त जानकारी प्राप्त हो जाएगी। वास्तव में, मैंने इस ग्रंथ को एक शोध-ग्रंथ का रूप प्रदान करने का प्रयास किया है और अध्यायीकरण करते समय शोध-प्रविधि का अनुपालन किया है।

चूँकि बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी का जीवन-संघर्ष बहुत दीर्घ है तथा इस पुस्तक का उद्देश्य केवल उनके जीवन-संघर्ष का वर्णन करना नहीं है। इसलिए प्रथम अध्याय में, डॉ. आंबेडकर के संपूर्ण जीवन-संघर्ष की बजाय केवल उनके प्रारंभिक जीवन-संघर्ष का वर्णन किया गया है। दूसरे अध्याय में, डॉ. आंबेडकर के जीवन-दर्शन और मिशन का विवरण दिया गया है। उनके दर्शन को चार भागों में विभाजित किया गया है - सामाजिक दर्शन, शिक्षा दर्शन, राजनीति दर्शन और धम्म दर्शन। डॉ. आंबेडकर के मिशन को पाँच भागों में विभाजित करके उनका उल्लेख किया गया है, जिनमें साहित्यिक मिशन, शैक्षिक मिशन, सामाजिक मिशन, राजनैतिक मिशन और धम्म मिशन आदि शामिल हैं। तीसरे अध्याय में, आंबेडकरवाद का अर्थ और परिभाषा का उल्लेख करते हुए आंबेडकरवाद का अन्य वादों से क्या संबंध है? उसका विश्लेषण किया गया है। मानवतावाद, बहुजनवाद, मार्क्सवाद, नारीवाद, बुद्धवाद, सुधारवाद, आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद आदि में किनसे आंबेडकरवाद का संबंध है और किनसे नहीं है? इसका स्पष्टीकरण किया गया है। साथ ही आंबेडकरवादी चेतना का विस्तार से विवरण दिया गया है। 'आंबेडकरवादी चेतना' और 'दलित चेतना' में क्या अंतर है? इसका भी विश्लेषण किया गया है। चौथे अध्याय में, आंबेडकरवादी कवियों का परिचय दिया गया है। कवि-परिचय से पहले यह स्पष्ट किया गया है कि आंबेडकरवादी

कवि किसे कहा जाए? अथवा आंबेडकरवादी कवि की क्या पहचान है? कवि-परिचय के अंतर्गत दर्जन भर प्रमुख कवियों का दीर्घ परिचय दिया गया है तथा अन्य कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पाँचवें अध्याय में, प्रतिमान का अर्थ एवं नये प्रतिमान की आवश्यकता का उल्लेख करते हुए आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमानों का विवरण और विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आंबेडकरवादी कविता के सिद्धांत और वैचारिकी के अंतर्गत समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय, सामाजिक यथार्थ, पाखंड पर प्रहार, वैज्ञानिक चेतना और संघर्ष आदि का वर्णन किया गया है। आंबेडकरवादी कविता की भावाभिव्यक्ति के अंतर्गत करुणा, शील, मैत्री, प्रेम, हास्य, क्रोध, उत्साह, प्रेरणा, चेतावनी और संदेश आदि भावों का उल्लेख किया गया है। आंबेडकरवादी कविताओं की संरचना के अंतर्गत छंद, लय, तुक और अलंकार का परिचय दिया गया है तथा आंबेडकरवादी कविता में निहित बिंब और प्रतीक का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, आंबेडकरवादी काव्य की भाषा का भी उल्लेख किया गया है। इस प्रकार आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान का स्पष्टीकरण सुव्यवस्थित और सारगर्भित ढंग से करने का प्रयास किया गया है।

माननीय मोहनदास नैमिशराय जी, जी.सी. लाल व्यथित जी, नंदलाल कौशल जी और माननीया कांता बौद्ध जी आदि साहित्यकारों ने अल्प समय में अपना कविता-संग्रह मुझे उपलब्ध कराया, इसके लिए मैं उक्त साहित्यकारों का हृदय से आभारी हूँ। डॉ. कुसुम वियोगी जी के आग्रह पर 'पुष्पांजलि प्रकाशन' दिल्ली के प्रकाशक महोदय माननीय राजेंद्र कुमार यादव जी ने इस आलोचना ग्रंथ 'आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान' को निःशुल्क मुद्रित व प्रकाशित करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। अतः मैं उक्त दोनों महानुभावों को हृदय से सधन्यवाद आभार ज्ञापित करता हूँ।

25 अक्टूबर, 2020 **देवचंद्र भारती 'प्रखर'**
(अशोक विजयादशमी एवं धम्मदीक्षा दिवस)